voluntary agencies technical support, publicity and extension.

Losses suffered by regional rural Banks

*92. SHRI M. S. GURUPADA-SWAMY:
DR. BAPU KALDATE:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Regional Rural Bank set up in 1984 with the objective of boosting priority sector have lost their financial viability;

(b) if so, what are the progressive losses suffered' by the Regional Rural Banks since their inception;

(c) what are the main causes identified for the losses; and

(d) what steps are contemplated by Government in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI DALBIR SINGH): (a) to (d) National Bank for Agriculture & Rural[1] Development (NABARD) have reported that during the year 1990-91 only 44 out of 196 Regional Rural Banks (RRBs) could earn profits amounting to Rs. 21.47 crores as against a loss of Rs. 91.87 crores incurred by 152 RRBs. The accumulated losses at the, end of March. 1991 were Rs 363.91 'crores. The 23 RRBs set up during the calendar year, 1984, incurred losses during the financial year 1990-91 amounting to Rs. 7.32 crores and their accumulated losses as at the end of March, 1991 aggregated to Rs. 22.81 crores. The reasons for weak financial health of the RRBs are attributable to severad factors like restriction on the choice of clientele, limited area of operation, low interest margins, mo anting establishment costs, particularly after Implementation of the award of the National Industrial Tribunal etc. Several measures have been taken to remove the financial weaknesses of RRBs such as, enhancement of share capital, reduction in the interest rate on relinance from this sponsor banks, increase in lending rates etc. The performance of RRBs is continually monitored by National Bank for Agriculture & Rural Development and the Government of India remedial measures taken to improve their performance and eliminate their financial weaknesses.

बैंकों का जमा-अनुपात

*93. श्री ईश दत्त यादव : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए राज्यों की तुलना में विकसित राज्यों में बैंकों का जमा अनुपात अधिक है ;

(ख) पिछले दो वर्षों के दौरान राज्यवार बैंक जमा-अनुपात कितना-कितना था ; और

(ग) पिछड़े हुए राज्यों में बैंक जमा-अनुपात में वृद्धि करने के लिए सरकार द्वारा अब तक क्या प्रयास किये गये हैं ?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री दलबीर सिंह) : (क) से (ग) सभवत: माननीय सदस्य का आशय विभिन्न राज्यों के ऋण जमा अनुपात से है । किसी एक राज्य अथवा क्षेत्र में स्थानीय रूप से प्राप्त जमा राशियों के जुटाने के सम्बध में ऋण का स्तर उस राज्य/क्षेत्र की ऋण के खपाने की क्षमता पर निर्भर करता है जो अनुकूल आधारभूत सुविधाओं के विकास जैसे सिचाई, बिजली, रेल, सड़क, परिवहन आदि तथा अपेक्षित निवेश की उपलब्धता एवं कृषि संबंधी औद्योगिक उत्पादन आदि की विपणन सुविधाओं के तथ्यों द्वारा निश्चित तथा प्रभावित करते हैं । किसी राज्य/क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास का सूचक केवल ऋण जमा अनुपात नहीं होगा । तथापि, आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असंतुलनों को दूर करने के लिये भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों से कहा है कि वे एक अखिल भारतीय आधार पर अपने ग्रामीण तथा